Seeti Bajaane Ke Ahkaam (Hindi)

सीटी बजाने के अह़काम

16 सफ़ह़ात

सीटी बजाने की मुख़्तलिफ़ सूरतें और उन के अह़काम	01
क्या दर्से निज़ामी करना आ़लिम होने के लिये शर्त़ है ?	04
क्या जन्नत में औ़रतों को दीदारे इलाही होगा ?	08
क्या ग़ौसे पाक رحمۃ اللہ علیہ मुफ़्ती भी थे ?	10
ज़िन्दा टिड्डियों को सीख़ में पिरो कर चूल्हे पर पकाना कैसा ?	13

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़लमिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सीटी बजाने के अह़काम**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सीटी बजाने के अह़काम[1]

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला **''सीटी बजाने के अह़काम''** पढ़ या सुन ले उसे दीनी मसाइल की समझ बूझ अ़ता फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा दे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सीटी बजाने की मुख़्तलिफ़ सूरतें और उन के अह़काम

सुवाल : हम अक्सर बातों बातों में या हंसी मज़ाक़ में सीटी बजाते हैं, इस ह़वाले से हमारी राहनुमाई फ़रमा दीजिये।

जवाब : सीटी बजाने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं जैसे बा'ज़ अवक़ात ट्राफ़िक का निज़ाम चलाने के लिये पोलीस वाले सीटी बजाते हैं या इस

---

1 ..... येह रिसाला 5 रबीउ़ल आख़िर 1441 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 2 दिसम्बर 2019 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले मदनी मुज़ाकरे का तह़रीरी गुलदस्ता है, जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे ''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा'' ने मुरत्तब किया है।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

2 .....تاریخ ابن عساکر، حرف النون، ناشب بن عمرو، ۶۱/۳۸۱، رقم: ۷۸۱۲، حدیث: ۱۲۶۶۱۔

त़रह़ की दीगर ज़रूरिय्यात के लिये सीटी बजाई जाती है तो ज़रूरतन सीटी बजाना जाइज़ है ।[3] (इस मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के क़रीब बैठे हुए मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) इसी त़रह़ कारख़ानों में येह ए'लान करने के लिये कि छुट्टी का वक़्त हो गया है सीटी बजाई जाती है इस की भी इजाज़त है लेकिन लह्वो लअ़ब के त़ौर पर सीटी बजाना जिसे उ़र्फ़े आ़म में छछोरा पन कहा जाता है इस की इजाज़त नहीं है ।[4] (इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) मुहज़्ज़ब आदमी लह्वो लअ़ब के त़ौर पर सीटी बजाने का सोच भी नहीं सकता और न ही उसे सीटी बजाना आती है। सीटी हाथ से भी बजाई जाती है और येह सिर्फ़ माहिर आदमी ही बजा सकता है आ़म आदमी का काम नहीं और न ही उसे सीटी बजाने की कोशिश करनी चाहिये कि बन्दा फ़ुज़ूल काम की कोशिश क्यूं करे ? आ़फ़िय्यत इसी में है कि बन्दा सीटी बजाने की कोशिश न करे क्यूं कि अगर बजेगी तो बजाने का शौक़ पैदा होगा कि जिसे नाचना आता है उसे नाचने का शौक़ भी होता है और जिसे नाचना नहीं आता उस की नाचने से जान छूटी रहती है।

बहर ह़ाल सीटी बजाने से मुतअ़ल्लिक़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द 3 सफ़ह़ा 511 पर है : "लोगों को बेदार करने या'नी जगाने और ख़बरदार करने के इरादे से बिगल या'नी सीटी बजाना जाइज़ है, जैसे ह़म्माम में बिगल इस लिये बजाते हैं कि लोगों को इत्तिलाअ़ हो जाए कि ह़म्माम खुल गया। रमज़ान शरीफ़ में सह़री खाने के वक़्त बा'ज़ शहरों में नक़्क़ारे बजते हैं, जिन से येह मक़्सूद होता है कि लोग सह़री खाने के

3..... बहारे शरीअ़त, 3/511, ह़िस्सा : 16 माख़ूज़न।
4..... बहारे शरीअ़त, 3/510, 511, ह़िस्सा : 16 माख़ूज़न।

लिये बेदार हो जाएं और उन्हें मा'लूम हो जाए कि अभी सह़री का वक़्त बाक़ी है येह जाइज़ है कि येह सूरत लह्वो लअ़ूब में दाख़िल नहीं।" एक त़रफ़ा ढोल को नक़्क़ारा कहते हैं मसलन अगर किसी गिलास वग़ैरा पर एक त़रफ़ चमड़ा चढ़ा लिया जाए तो वोह नक़्क़ारा कहलाएगा और अगर दोनों त़रफ़ चमड़ा हो तो ढोल। अब शायद ही कहीं नक़्क़ारे बजते हों क्यूं कि इलेक्ट्रोनिक सिस्टम हर जगह पहुंच चुका है। बहर ह़ाल अगर नक़्क़ारा म्यूज़िक वाले अन्दाज़ में न बजाया जाए और इस से मक़्सूद सह़री के लिये लोगों को जगाना और येह इत्तिलाअ़ देना हो कि सह़री का वक़्त हो गया है या सह़री का वक़्त अभी बाक़ी है तो नक़्क़ारा बजाना जाइज़ है। "इसी त़रह़ कारख़ानों में काम शुरूअ़ और ख़त्म होने के वक़्त सीटी बजा करती है येह जाइज़ है कि इस से भी लह्वो लअ़ूब मक़्सूद नहीं होता बल्कि इत्तिलाअ़ देने के लिये येह सीटी बजाई जाती है। यूं ही रेलगाड़ी की सीटी से भी मक़्सूद येही होता है कि लोगों को मा'लूम हो जाए कि गाड़ी छूट रही है या इसी क़िस्म के दूसरे सह़ीह़ मक़्सद के लिये सीटी दी जाती है येह भी जाइज़ है।"(5)

कबूतर उड़ाने के लिये सीटी बजाना कैसा ?

सुवाल : शहरों और दीहातों में शाम के वक़्त कबूतर उड़ाए जाते हैं तो इस मौक़अ़ पर सीटी बजाना कैसा है ?

जवाब : अगर परिन्दे उड़ाने के लिये सीटी बजाते हैं कि परिन्दे फ़स्ल को ख़राब करते हैं तो येह भी एक ज़रूरत है लिहाज़ा येह भी जाइज़ के हुक्म में है। रही बात कबूतर उड़ाने के लिये सीटी बजाने की तो येह

(5)...... درمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،۹/۵۷۸-۵۷۹ماخوذاً, बहारे शरीअ़त, 3/511, ह़िस्सा : 16

कबूतर उड़ाते नहीं उन्हें सताते हैं। कबूतर उड़ाने वाले कबूतरों को उतरने नहीं देते, उन को थकाते और भूका रखते हैं यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात कबूतर भूक से निढाल हो कर नीचे गिरते हैं, तो परिन्दों को इस त़रह़ सताना ह़राम है। ''कबूतर पालने वाले बा क़ाइदा कबूतरों को सधाते हैं और फिर येह कबूतर दूसरे कबूतरों को अपने ग़ौल में फंसा कर ले आते हैं जिन्हें येह कबूतर वाले पकड़ लेते हैं ह़ालां कि इस त़रह़ किसी और के कबूतर पर क़ब्ज़ा जमा लेना ह़राम है।''[6] याद रखिये ! अगर आप ने कबूतर को चोरी के लिये इस्ति'माल किया तो आप गुनाहगार और जहन्नम के ह़क़दार होंगे। जब इस त़रह़ कबूतर उड़ाना गुनाह का काम है तो इस के लिये सीटी बजाना भी एक गुनाह के काम के लिये होगा लिहाज़ा एक गुनाह मज़ीद बढ़ जाएगा।[7]

क्या दर्से निज़ामी करना आ़लिम होने के लिये शर्त़ है ?

सुवाल : क्या दर्से निज़ामी करना आ़लिम होने के लिये शर्त़ है ?[8]

6..... در مختار، کتاب الشهادات، باب القبول و عدمه، ۸/۲۲۹ ماخوذاً۔ बहारे शरीअ़त, 2/947, ह़िस्सा : 12

7..... ह़दीसे पाक में है : तीन चीज़ें जूआ हैं : (1) शत्रिंया बाज़ियां (2) छोटे छोटे तीरों को फेंक कर जूआ खेलना और (3) सीटियां बजा बजा कर कबूतर उड़ाना। (کنز العمال، حرف اللام، کتاب اللهو و اللعب و الغنی، الجزء: ۱۵، ۸/۹۴، حدیث: ۴۰۶۳۲) आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कबूतर पालना जब कि ख़ाली दिल बहलाने के लिये हो और किसी अम्रे ना जाइज़ की त़रफ़ मुअद्दी (या'नी ले जाने वाला) न हो जाइज़ है और अगर छतों पर चढ़ कर उड़ाए कि मुसल्मानों की औ़रत पर निगाह पड़े या उन के उड़ाने को कंकरियां फेंके जो किसी का शीशा तोड़ें, किसी की आंख फोड़ें या पराए कबूतर पकड़े या उन का दम बढ़ाने और अपना तमाशा होने के लिये दिन दिन भर उन्हें भूका उड़ाए, जब उतरना चाहें न उतरने दे तो ऐसा पालना ह़राम है। (अह़कामे शरीअ़त, स. 38)

8..... येह सुवाल शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा फ़रमूदा ही है।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

जवाब : दर्से निज़ामी करना आ़लिम होने के लिये न तो शर्त़ है और न ही काफ़ी है, अलबत्ता आ़लिम बनने का बेहतरीन ज़रीआ़ ज़रूर है। जिस ने दर्से निज़ामी की सनद ह़ासिल कर ली अब वोह पूरा आ़लिम भी बन गया हो येह ज़रूरी नहीं है क्यूं कि 100 फ़ीसद फ़र्ज़ उ़लूम दर्से निज़ामी में नहीं पढ़ाए जाते । नीज़ अब दर्से निज़ामी या'नी आ़लिम कोर्स सिमटता चला जा रहा है ह़ालां कि एक दौर में येही आ़लिम कोर्स ग़ालिबन 16 साल में हुवा करता था, फिर कम होते होते 10 साल पर आया और फिर आठ साल का हुवा जो एक अ़र्से तक चलता रहा मगर अब इस्लामी भाइयों का छे साल और इस्लामी बहनों का पांच साल का हो चुका है। याद रखिये ! दर्से निज़ामी को मजबूरी के त़ौर पर समेटा गया है क्यूं कि इतने सालों के लिये लोग आते ही नहीं हैं। दर्से निज़ामी से कई किताबें निकाल दी गई हैं यहां तक कि फ़ारसी ज़बान जिसे पहले दर्से निज़ामी का लाज़िमी जुज़ समझा जाता था उसे भी निकाल दिया गया है तो यूं बहुत सी चीज़ें निकाली गई हैं ताकि किसी बहाने लोग दर्से निज़ामी करने की त़रफ़ राग़िब हों कि न करने से करना करोड़ दरजे बेहतर है।

ईमान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

सुवाल : आज के इस गए गुज़रे दौर में ईमान की ह़िफ़ाज़त किस त़रह़ की जाए ?[9]

जवाब : आज कल ह़ालात बड़े नाज़ुक हैं और ईमान की ह़िफ़ाज़त वाक़ेई एक दुश्वार काम है। हम मुसल्मानों के घर में पैदा तो हो गए लेकिन अब

9..... येह सुवाल शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा फ़रमूदा ही है।
(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

क़ब्र में भी मोमिन होने की ह़ालत में जाएंगे, येह ज़रूरी नहीं है। ह़दीसे पाक में येह मज़्मून मौजूद है कि ''एक ज़माना ऐसा आएगा कि बन्दा सुब्ह़ को मोमिन और शाम को काफ़िर होगा और शाम को मोमिन और सुब्ह़ को काफ़िर होगा।''[10] ईमान बचाना इतना मुश्किल होगा कि जैसे हथेली पर आग की चिंगारी रखना।[11] या'नी जिस त़रह़ हाथ पर चिंगारी रखना मुश्किल है इसी त़रह़ ईमान बचाना भी बहुत मुश्किल है। हम येह समझ बैठे हैं कि हम मुसल्मानों के घर में पैदा हुए हैं और हमारा नाम भी मुसल्मानों वाला है तो अब हम जिस की चाहें सोह़बत में रहें, जिस की चाहें सुनें और इस त़रह़ की बे वुक़ूफ़ाना बातें करें कि ''सुनो सब की करो मन की'' ह़ालां कि जब हमें अपने ह़क़ीक़ी इस्लाम और ह़क़ीक़ी अ़क़ीदे का पता नहीं है तो फिर हम किस त़रह़ हर एक की सुन सकते हैं और हर एक की सोह़बत इख़्तियार कर सकते हैं ?

सिर्फ़ और सिर्फ़ उन उ़लमाए किराम की सोह़बत में रहिये कि जो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़ हों और जिन का अ़क़ीदा बिल्कुल 100 फ़ीसद दुरुस्त हो या'नी उन के अ़क़ीदे में न तो अम्बियाए किराम, عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अहले बैते अत़्हार और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के बारे में कोई कमज़ोरी हो और न वोह किसी सह़ाबी के ज़र्रा बराबर गुस्ताख़ हों। नीज़ जो किसी भी सह़ाबी की अदना तौहीन करता हो वोह हमारे किसी काम का नहीं है लिहाज़ा इसे अपनी डिक्शनरी से निकाल दीजिये, उस की सोह़बत इख़्तियार करने से बचिये और उस की सुनना

---

[10] .....مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی المبادرۃ بالاعمال قبل تظاھر الفتن، ص۷۹، حدیث:۳۱۳۔

[11] .....ابن ماجہ، کتاب الفتن، ۴/۳۶۵، حدیث: ۴۰۱۴ بتغیر قلیل۔

तो दूर की बात है उसे देखना भी नहीं है। मेरी येह बातें ईमान बचाने का सामान हैं तो अब अगर आप को मेरी इन बातों पर ग़ुस्सा आए तो समझ लीजिये कि आप अपने ही हाथों अपने पाउं पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। याद रहे ! मैं आप के ईमान की ह़िफ़ाज़त इस लिये करता हूं कि मैं दीन का अदना ख़ादिम हूं वरना मुझे इस से कोई पैसा नहीं मिलता। मुझे बुरे ख़ातिमे से डर लगता है और मैं भी अपने ईमान की सलामती के लिये फ़िक्र मन्द हूं कि ख़ुदा जाने मेरा क्या होगा ? सभी को बुरे ख़ातिमे से डरना चाहिये और इस ह़वाले से ख़ुद भी दुआ़ करनी चाहिये और दूसरों से भी करवानी चाहिये। बहर ह़ाल अगर आप अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और सिर्फ़ आ़शिक़ाने रसूल की दीनी किताबें पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ैर ही ख़ैर है वरना अगर नेट पर सर्च कर के या वैसे ही इधर उधर का लिट्रेचर पढ़ेंगे तो आप को पता भी नहीं चलेगा और आप का ईमान बरबाद हो जाएगा क्यूं कि मुम्किन है कोई ग़लत़ बात आप के ज़ेह्न में बैठ जाए और ईमान को तबाह कर दे।

अ़त्तार है ईमां की ह़िफ़ाज़त का सुवाली
ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, 406)

दौराने मदनी मुज़ाकरा तस्बीह़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : इज्तिमाई मदनी मुज़ाकरे में बुज़ुर्ग ह़ज़रात तस्बीह़ पढ़ते रहते हैं हम उन्हें किस त़रह़ समझाएं ?

जवाब : जो बुज़ुर्ग ह़ज़रात ऐसा करते हैं उन्हें मदनी मुज़ाकरे की समझ भी नहीं पड़ती होगी कि क्या बोला जा रहा है ? ज़ाहिर है जो दौराने मदनी

मुज़ाकरा तस्बीह़ पढ़ेगा वोह सुन भी नहीं पाएगा तो यूं ग़लत़ फ़हमी हो सकती है और इस में ह़लाल को ह़राम और ह़राम को ह़लाल समझने का बहुत ज़ियादा ख़त़रा है। नीज़ बा'ज़ अवक़ात मदनी मुज़ाकरे में ईमान व कुफ़्र से मुतअ़ल्लिक़ बातें हो रही होती हैं उस वक़्त कुछ पढ़ने के बजाए सिर्फ़ कान लगा कर ध्यान से सुनना चाहिये। बा'ज़ लोग मदनी मुज़ाकरे के दौरान एक दूसरे को इशारे कर के कहते हैं सुनो ! क्या बोला जा रहा है ? तो इस त़रह़ करने से भी ग़लत़ फ़हमी हो जाती होगी लिहाज़ा इशारों से भी बचना चाहिये। याद रखिये ! अगर कोई आ जा रहा हो तो उसे भी न छेड़ें और न ही बैठ जाओ, बैठ जाओ की आवाज़ें लगाएं कि बा'ज़ अवक़ात ऐसा करने से भी ग़लत़ फ़हमी हो जाती है।

क्या जन्नत में औ़रतों को दीदारे इलाही होगा ?

सुवाल : क्या औ़रतों को भी जन्नत में **अल्लाह** पाक का दीदार होगा ?

जवाब : बिल्कुल होगा।[12]

मंगनी में पांच मन मिठाई ले कर आना !

सुवाल : अगर लड़की वाले लड़के वालों से कहें कि "मंगनी में पांच मन मिठाई ले कर आना" और लड़के वालों की इतनी गुन्जाइश न हो तो वोह क्या करें ? नीज़ इस त़रह़ की रस्मों के बारे में शरीअ़त क्या कहती है ?

जवाब : कहीं कहीं ऐसा है जैसे मेमन बिरादरी में ख़र्चे की वज्ह से लड़की वाले आज़्माइश में होते हैं और बा'ज़ बिरादरियों में लड़के वाले

12..... जन्नत की ने'मतें मर्द व औ़रत में मुश्तरक हैं, महल्लात, लिबास, ग़िज़ाएं, ख़ुश्बूयात वग़ैरहा अलबत्ता दीदारे इलाही में इख़्तिलाफ़ है और सह़ीह़ येह है कि (दीदारे इलाही भी मर्द व औ़रत) दोनों को होगा।

(फ़तावा अहले सुन्नत, सिल्सिला नम्बर : 7, स. 24)

आज़्माइश में होते हैं। बहर ह़ाल मिठाई न तो पांच मन मांगी जाए और न ही पांच किलो क्यूं कि देने वाला इस वज्ह से देता है कि अगर न दी तो शादी नहीं होगी या येह लोग हमारी बच्ची या बच्चे को तक्लीफ़ देंगे या सामने वाले के शर से बचना मक़्सूद होता है कि न देने की सूरत में वोह हमें कन्जूस कहेंगे, त़रह़ त़रह़ की बातें करेंगे और झूट सच मिला कर हमारी जग हंसाई का सबब बनेंगे। याद रखिये ! इस वज्ह से मिठाई या कोई भी अच्छी चीज़ देना रिश्वत कहलाएगा[13] और लेने वाला गुनाहगार होगा, देने वाला चूंकि शर या बुराई से बचने या अपनी इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त के लिये दे रहा है इस लिये इस पर गुनाहगार होने का हुक्म नहीं होगा।[14]

शादी बियाह की तक़्रीब में ताख़ीर की वज्ह और इस का ह़ल

सुवाल : शादी कार्ड पर खाने का जो वक़्त लिखा होता है उस वक़्त के मुत़ाबिक़ खाना नहीं खिलाया जाता तो क्या येह वक़्त लिखना झूट में शुमार होगा ?

जवाब : लोग ही न आएं तो खाना किस को खिलाएं ? आ़म त़ौर पर लोग वक़्त पर नहीं आते जिस की वज्ह से खाना लेट हो जाता है। लोगों का येह ज़ेह्न बन गया है कि अगर कार्ड पर 10 बजे का लिखा है तो खाना 11 बजे से पहले शुरूअ़ नहीं होगा लिहाज़ा अगर हम लिखे हुए वक़्त के ह़िसाब से जाएंगे तो काफ़ी देर तक शादी हॉल में फंसे रहेंगे तो यूं अब लोगों की ताख़ीर से आने की ऐसी आ़दत बन गई है कि जिस की इस्लाह़ बहुत मुश्किल है।

13..... फ़तावा रज़विय्या, 12/257, 258 मुलख़्ख़सन।
14..... फ़तावा रज़विय्या, 17/300 माख़ूज़न।

समाजी इदारे वाले अगर अपनी अपनी कम्यूनिटी के लोगों को समझाएं तो हो सकता है इस का कुछ ह़ल निकल आए वरना ख़ाली क़ानून पास करने से कुछ नहीं होता क्यूं कि क़ानून सिर्फ़ तह़रीर में आ जाएगा और फिर बा'द में पता भी नहीं होगा कि क़ानून बना भी था या नहीं ? बल्कि क़ानून बनाने वाले ख़ुद भी इसे भूल जाएंगे। बेहतर येही है कि एक मजलिस इस काम के लिये बनाई जाए और वोह येह सारे मुआ़मलात ह़ल करने की कोशिश करे जैसा कि अगर इस माह हमारी बिरादरी में तीन शादियां हैं तो येह मजलिस दूल्हा और दुल्हन में से हर फ़रीक़ के पास जाए और उन को मह़ब्बत से समझा कर इस बात पर राज़ी करे कि दूल्हा इतने बजे आ जाएगा और दुल्हन वाले भी मजलिस से बोलें कि आप फ़िक्र न करें हमारा खाना दूल्हा वालों के आने से पहले ही शादी हॉल में मौजूद होगा और हम खाने का इन्तिज़ार नहीं करवाएंगे। इस त़रह़ अगर कोई समाजी इदारा आगे आएगा तो उस की देखादेखी दूसरे समाजी इदारे भी ऐसा करने लगेंगे और यूं निज़ाम में कुछ न कुछ बेहतरी आ जाएगी। सिर्फ़ बातें और देर देर तक बह़सो मुबाह़सा करने और ज़बर दस्ती की हमदर्दियां दिखाने से कुछ नहीं होगा।

क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुफ़्ती भी थे ?

सुवाल : क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुफ़्ती भी थे ?

जवाब : ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुज्तहिदे मुत़्लक़ या'नी ह़क़ीक़ी मुफ़्ती थे।[15] मुज्तहिद ही अस्ल मुफ़्ती होता है और अब जो मुफ़्ती हैं येह

15..... आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हमेशा से ह़म्बली थे और बा'द को जब ऐ़नुश्शरीअ़तिल कुब्रा तक पहुंच कर मन्सबे "इज्तिहादे मुत़्लक़" ह़ासिल हुवा, मज़्हबे ह़म्बल को कमज़ोर होता हुवा देख कर उस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दिया कि हुज़ूर, मुह़्युद्दीन और दीने मतीन के येह चारों सुतून हैं, लोगों की त़रफ़ से जिस सुतून में ज़ो'फ़ आता देखा उस की तक़्वियत फ़रमाई। (फ़तावा रज़विय्या, 26/433)

''मुफ़्तियाने नाक़िल'' कहलाते हैं या'नी मुज्तहिदीन ने जो कुछ बयान फ़रमाया उस में से मस्अला निकाल कर हमें फ़तवा देते हैं।[16]

मल्फ़ूज़ाते ग़ौसे आ'ज़म पर मुश्तमिल किताब

सुवाल : क्या इस दौर में भी हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मल्फ़ूज़ात की किताबें मिलती हैं ? अगर मिलती हैं तो उन पर ए'तिबार किया जा सकता है ?

जवाब : ए'तिबार न करने की वज्ह क्या है ? हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की किताब ''फ़ुतूहुल ग़ैब'' बहुत मश्हूर है। इस किताब का कई ज़बानों में तरजमा किया गया है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस किताब की शर्ह़ भी फ़रमाई है जो उर्दू तरजमे के साथ मिलती है। याद रहे ! तरजमा किसी आ़शिक़े ग़ौसुल आ'ज़म का ही लेना चाहिये।[17]

मा'ज़ूर बच्चा चलने लगा (करामत)

सुवाल : हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की कोई करामत बता दीजिये।[18]

जवाब : एक बार कुछ ऐसे लोग जिन की सोच औलियाए किराम

16..... इल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल, स. 41, 42

17..... ''फ़ुतूहुल ग़ैब'' हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की तसव्वुफ़ के मौज़ूअ़ पर निहायत उ़म्दा तस्नीफ़ है, इस किताब में आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने कश्फ़ व मुजाहदात से ह़ासिल होने वाले दिलचस्प निकात भी बयान फ़रमाए हैं। ख़ातमुल मुह़द्दिसीन शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ''मिफ़्ताहुल फ़ुतूह़ शर्ह़े फ़ुतूहुल ग़ैब'' के नाम से फ़ारसी ज़बान में इस की शर्ह़ भी लिखी है।

18..... येह सुवाल शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा फ़रमूदा ही है।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم के बारे में अच्छी नहीं थी, दो टोकरे ले कर हमारे ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और पूछा : इन दोनों में क्या है ? आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपनी कुरसी से उतर कर एक टोकरे पर अपना हाथ मुबारक रखा और फ़रमाया : इस में बीमार बच्चा है। फिर अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को उसे खोलने का हुक्म दिया, जब वोह टोकरा खोला गया तो उस में से वाक़ेई एक बीमार बच्चा निकला जो मा'ज़ूर था, आप ने उसे पकड़ कर फ़रमाया : "قُمْ بِاِذْنِ اللّٰہ या'नी **अल्लाह** पाक के हुक्म से उठ !" तो वोह उठ कर खड़ा हो गया । फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने दूसरे टोकरे पर हाथ रख कर फ़रमाया : इस में सिह़ह़त मन्द बच्चा है । फिर उस टोकरे को खोलने का हुक्म दिया, जैसे ही टोकरा खोला गया तो उस में से वाक़ेई एक सिह़ह़त मन्द बच्चा निकला और वोह उठ कर चलने लगा। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की येह करामत देख कर उन लोगों ने अपनी बुरी सोच से तौबा कर ली ।(19)

इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा : ❁ औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم की बड़ी शान होती है ❁ **अल्लाह** करीम ने उन्हें ऐसी त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह टोकरे को खोले बिग़ैर येह बता सकते हैं कि इस के अन्दर क्या है ? ❁ वोह जब चाहते हैं **अल्लाह** पाक की इनायत से बीमार को अच्छा कर देते हैं ❁ वोह शख़्स बहुत बुरा है जो **अल्लाह** पाक के औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِم के बारे में ग़लत़ सोच रखता है। **अल्लाह** पाक हमें ऐसी ग़लत़ सोच से बचाए । आमीन

---

(19)......بہجۃ الاسرار، ذکر فصول من کلامہ مرصعا بشیء من عجائب احوالہ مختصراً، ص ۱۲۴۔

रह़्म दिली किसे कहते हैं ?

सुवाल : रह़्म दिली किसे कहते हैं ? नीज़ क्या इस का सवाब होता है ?

जवाब : रह़्म दिली या हमदर्दी का मत़्लब है लोगों पर तर्स आना या उन पर रह़्म करना और ज़ुल्म न करना। जो **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये किसी पर रह़्म करेगा उसे सवाब मिलेगा और **अल्लाह** पाक उस पर रह़्म फ़रमाएगा।[20] अगर वाक़ेई हमारे अन्दर अपने मुसल्मान भाइयों के लिये रह़्म दिली पैदा हो जाए तो हमारा मुआ़शरा बिल्कुल साफ़ सुथरा और दुरुस्त हो जाएगा। आज घर घर में ज़ुल्म की आंधियां चल रही हैं, लड़ाई झगड़े, एक दूसरे की बे इ़ज़्ज़ती करना, बुरा भला बोलना और सताना आ़म हो चुका है, गाउं गोठ हर जगह नफ़्सा नफ़्सी है और लोग एक दूसरे की बुराइयां करने में मश्ग़ूल हैं तो यूं हर दूसरा बन्दा किसी न किसी की काट करने में लगा हुवा है। येही वज्ह है घरों में सुकून नहीं रहा, पड़ोस का आराम ख़त्म हो गया है, मह़ल्ले का चैन बरबाद हो गया है और शह़र का अम्न भी बाक़ी नहीं रहा।

ज़िन्दा टिड्डियों को सीख़ में पिरो कर चूल्हे पर पकाना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ लोग ज़िन्दा टिड्डियों को सीख़ में पिरो कर चूल्हे पर पकाते हैं, उन का ऐसा करना कैसा है ?

जवाब : इस मन्ज़र को देखने से ही आदमी के बदन में झुरझुरी आ जाए मगर पता नहीं लोगों का दिल इस त़रह़ करने के लिये कैसे राज़ी होता है ?

---

20 ..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : रह़्म करने वालों पर रह़मान रह़्म फ़रमाता है, तुम ज़मीन वालों पर रह़्म करो आस्मानों की बादशाहत का मालिक तुम पर रह़्म करेगा। (ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی رحمۃ المسلمین، ۳/۳۷۱، حدیث: ۱۹۳۱)

ऐसे लोग ख़ुद को सूई चुभा कर देखें उन से येह बरदाश्त नहीं हो पाएगा तो फिर बेचारी टिड्डियों को सीख़ में ज़िन्दा पिरोना कितना ज़ियादा तक्लीफ़ देह होगा ! टिड्डी ह़लाल होने का येह मत़लब नहीं कि उसे तक्लीफ़ के साथ पकाया जाए कोई और त़रीक़ा भी इख़्तियार किया जा सकता है मसलन उस के मरने का इन्तिज़ार कर लिया जाए कि आख़िर येह भी मरती ही है या कोई ऐसी सूरत निकाली जाए कि येह मर जाए और फिर उसे पका लिया जाए। याद रहे ! ह़दीसे पाक में टिड्डी खाने की इजाज़त दी गई है।[21]

त़ालिबे इल्म को कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : त़ालिबे इल्म को कैसा होना चाहिये ?

जवाब : त़ालिबे इल्म को चाहिये कि अपने मक़्सद "रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल" को हर वक़्त पेशे नज़र रखे, अपना वक़्त बरबाद करने से बचे, अख़्लाक़ दुरुस्त रखे, ज़बान आंख और दिल की ह़िफ़ाज़त करे, सुवाल से बचे या'नी लोगों से पैसे न मांगे, अल्बत्ता मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अपने उस्ताद से सुवाल कर सकता है, आ़जिज़ी करे या'नी अपने आप को कुछ न समझे, ह़िर्से माल से कोसों दूर हो या'नी पैसों के लालच में न पड़े, इल्म का ह़रीस हो, मुर्शिद, असातिज़ा और वालिदैन का अदब करे, अपने मद्रसे के निज़ामुल अवक़ात की पाबन्दी करे, ह़क़्क़े सोह़बत का ख़याल रखे या'नी जो त़ालिबे इल्म क़रीब बैठता हो उस के ह़ुक़ूक़ का ख़याल रखे कि वोह उस का क़रीबी पड़ोसी है और उस के ह़ुक़ूक़ हैं और

---

21 ..... रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हमारे लिये दो मरे हुए जानवर और दो ख़ून ह़लाल हैं। दो मुर्दे मछली और टिड्डी हैं और दो ख़ून कलेजी और तिल्ली हैं। (ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الکبد والطحال، ۴/۳۲، حدیث: ۳۳۱۴)

क़ियामत के दिन इस से येह सुवाल भी होगा कि अपने पड़ोसी का ह़क़ अदा किया या ज़ाएअ़ किया ? लिहाज़ा उस के लिये तक्लीफ़ देह न बने बल्कि ज़रूरतन उस की मदद करे जैसा कि पढ़ने पढ़ाने में एक दूसरे की मदद की जाती है । तक्लीफ़ें आएं तो सब्र करे, इबादत का ज़ौक़ रखे या'नी ख़ूब इबादत करे, नेकी की दा'वत भी दिया करे । त़ालिबे इल्म के लिये येह कुछ मदनी फूल हैं जिन्हें मैं ने मक्तबतुल मदीना की किताब ''काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ?''[22] से आसान कर के पेश करने की कोशिश की है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मंगनी में पांच मन मिठाई ले कर आना !	8
कबूतर उड़ाने के लिये सीटी बजाना कैसा ?	3	क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मुफ़्ती भी थे ?	10
दौराने मदनी मुज़ाकरा तस्बीह़ पढ़ना कैसा ?	7	मा'ज़ूर बच्चा चलने लगा (करामत)	11
क्या जन्नत में औ़रतों को दीदारे इलाही होगा ?	8	रह़ूम दिली किसे कहते हैं ?	13
		त़ालिबे इल्म को कैसा होना चाहिये ?	14

22..... ''काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ?'' येह मक्तबतुल मदीना की 63 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल एक बेहतरीन और जामेअ़ किताब है, इस किताब में उन तमाम उमूर को बयान करने की कोशिश की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ एक त़ालिबे इल्म से हो सकता है मसलन ह़ुसूले इल्म में क्या निय्यत होनी चाहिये ? अस्बाक़ का मुत़ालआ़ किस त़रह़ करना चाहिये ? सबक़ किस त़रह़ याद किया जाए ? अपने असातिज़ा, जामिआ़ की इन्तिज़ामिया और वालिदैन के साथ तअ़ल्लुक़ात की नौइय्यत क्या होनी चाहिये ? बिल उ़मूम सभी और बिल ख़ुसूस तुलबाए इल्मे दीन के लिये इस किताब का मुत़ालआ़ करना बेह़द मुफ़ीद है । (शो'बए अमीरे अहले सुन्नत)

अमीरे अहले सुन्नत के रिसाले ''क़ौमे लूत़ की तबाह कारियां'' से कुछ मदनी फूल

ऐसा न कीजिये :

दौराने गुफ़्तगू एक दूसरे के हाथ पर ताली देना ठीक नहीं क्यूं कि ताली, सीटी बजाना महज़ खेलकूद, तमाशा और त़रीक़ए कुफ़्फ़ार है।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 9, स. 549)

क़ौमे लूत़ के काम :

ह़ज़रते सय्यिदुना लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के लोग बदफ़े'ली के इलावा ऐसे ज़लील अफ़्आ़ल और ह़रकात के आ़दी थे जो अ़क़्ली और उ़र्फ़ी दोनों त़रह़ से क़बीह़ और मम्नूअ़ थे, जैसे गाली देना, फ़ोह़्श बकना, ताली और **सीटी बजाना,** एक दूसरे को कंकरियां मारना, रास्ता चलने वालों पर कंकरी वग़ैरा फेंकना, शराब पीना, मज़ाक़ उड़ाना, गन्दी बातें करना और एक दूसरे पर थूकना वग़ैरा। (सिरातुल जिनान, 7/367)

सीटी और ताली

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّ تَصْدِيَةً ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और का'बे के पास उन की नमाज़ नहीं मगर सीटी और ताली। (پ۹، الانفال:۳۵)

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश नंगे हो कर ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करते, सीटियां और तालियां बजाते थे और उन का येह फ़े'ल या तो इस बात़िल अ़क़ीदे की वज्ह से था कि सीटी और ताली बजाना इ़बादत है और या इस शरारत की वज्ह से कि उन के इस शोर से हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नमाज़ में परेशानी हो। (تفسیر کبیر، الانفال، تحت الآیۃ:۳۵، ۵/۴۸۱)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

जन्नत में दरख़्त लगाने का आसान नुस्ख़ा

(एक बार) मदीने के ताजदार صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ को मुलाहज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। पूछा : क्या कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : दरख़्त लगा रहा हूं। फ़रमाया : मैं बेहतरीन दरख़्त लगाने का त़रीक़ा बता दूं ! سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر पढ़ने से हर कलिमे के बदले जन्नत में एक दरख़्त लग जाता है।

(سنن ابن ماجہ، ج۴، ص۲۵۲، حدیث: ۳۸۰۷)

M.R.P. ₹ 00/-

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net